व्याख्या केन्द्र 'श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी' का उद्घाटन समारोह एवं 'काशी व्याख्यानमाला (तृतीय)' विषयक संगोष्ठी का संक्षिप्त विवरण
मंगलवार,२५ अक्टूबर, २०१६ प्रातः १० बजे

दिनांक २५ अक्टूबर, २०१६ को इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी के द्वारा हरिश्चन्द्र बालिका इण्टर कालेज, मैदागिन में स्थापित 'श्री सिद्धेश्वरी देवी' व्याख्या केन्द्र का उद्घाटन समारोह एवं साथ ही काशी व्याख्यानमाला के क्रम में तीसरे व्याख्यान 'सांस्कृतिक राजधानी काशी की संगीत परम्परा' का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथियों के द्वारा माँ सरस्वती के सम्मुख दीप-प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण से हुआ। अतिथियों के स्वागत में कालेज की छात्राओं ने श्रीमती सिद्धेश्वरी देवी के भजन प्रस्तुत किया।

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द, क्षेत्री केन्द्र, वारणसी के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने अतिथि वक्ता पं० चित्तरंजन ज्योतिषी जी को अंगवस्त्र एवं पुष्पहार प्रदान कर सम्मानित किया। कालेज की प्राचार्या डा० शुभदा मिश्रा ने कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो० के०डी० त्रिपाठी जी को अंगवस्त्र एवं पुष्पहार से सम्मानित किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि विद्यालय के उप-प्रबन्धक श्री प्रदीप अग्रवाल जी को उसी विद्यालय के सदस्य श्री गिरिजा शंकर मिश्र ने सम्मानित किया।

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी के डा० रजनीकान्त त्रिपाठो ने विद्यालय की प्राचार्या को पुष्पगुच्छ प्रदान कर सम्मानित किया। अतिथियों का स्वागत एवं मुख्य वक्ता का परिचय व्याख्या केन्द्र के नोडल अधिकारी डा० त्रिलोचन प्रधान ने किया।

काशी व्याख्यानमाला के अन्तर्गत प्रो० चित्तरंजन ज्योतिषी, भूतपूर्व कुलपति राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश ने 'सांस्कृतिक राजधानी काशी की संगीत परम्परा' विषय पर विशिष्ट व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि काशी की संगीत परम्परा को राष्ट्रीय स्तर पर जितनी मान्यता मिलनो चाहिए थी उतनी नहीं मिल सकी है। इसका कारण जो भी हो लेकिन आधुनिक समय में काशी के कलाकारों ने इसकी क्षतिपूर्ति की है और आगे भी प्रयासरत हैं। अपने व्याख्यान में उन्होंने आगे कहा कि काशी के विभिन्न मुहल्ला और स्थान संगीत के केन्द्र रहे हैं जिस पर विस्तृत प्रकाश उन्होंने अपने व्याख्यान में डाला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में व्याख्या केन्द्रों की स्थापना के विषय में कहा कि इसका लक्ष्य है भारत की आगामी पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से परिचित कराना तथा उनको भारतीय संस्कृति के विविध आयामों के प्रति जिज्ञासु बनाना। इसीलिए भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं विलुप्त हो रही लोक कलाओं के महत्त्व को रेखांकित कर इनसे भारतीय तथा विश्व जनमानस को अवगत कराने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही यह महत्त्वपूर्ण परियोजना प्रारम्भ की गयी है। उन्होंने आगे अपने व्याख्यान में

संस्कृत के विद्वानों यथा पं० पट्टाभिराम शास्त्री का, पं०महादेव मिश्र आदि कलाकारों के प्रति प्रगाढ़ अनुराग होने का भी उल्लेख किया।

इस अवसर पर संगीत के अनुरागी जन यथा ऐंग्लो बंगाली इण्टर कालेज के डा० विश्वनाथ दुबे, रामकृष्ण विद्या मंदिर इण्टर कालेज से भगवतीशरण दुबे, डीएवी कालेज के प्राचार्य डा० राधाकान्त मिश्रा, नवयुग विद्यामंदिर से डा० राजेश कुमार पाण्डेय, आर्यमहिला इण्टर कालेज से श्रीमती प्रतिभा यादव एवं विद्यालय की भूतपूर्व प्राचार्या डा० अल्पना राय आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन विद्यालय की प्राचार्या डा० शुभदा मिश्रा ने किया तथा सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती कंचनबाला ने किया।